जमुनाजी का मूलकुंड कठेड़ा चबूतरा ढांपी खुली सात घाट।।
किनारे मोहोल जोए के, तुम मिल देखो मोमिन।
पाउ पलक न छोड़िए, अपना एही जीवन।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! जमुनाजी के किनारे के महल बड़े सुन्दर हैं। वहां से एक क्षण के लिए भी अपने चित्त को न हटाएं। सब मोमिन मिलकर देखो यही अपना जीवन है।

अब जल तले जो आइया, उतर कुंड से जे।
केताक फैल्या तले दरखतों, और निकसी नेहेर बड़ी ए।। २ ।।

अधबीच के कुण्ड से जल नीचे उतर कर आता है। वृक्षों के नीचे एक भाग फैल जाता है और बाकी नहरों से आकर पानी बड़ी नहर में मिल जाता है।

जोए जमुनाका जल जो, पहाड़ से निकसत।
सो पोहोंच्या तले चबूतरे, ए बैठक अति सोभित।। ३ ।।

जमुनाजी का जल पहाड़ से निकलकर ढपो चबूतरे के नीचे पहुंचता है, जहां सुन्दर बैठक बनी है।

तीनों तरफों कठेड़ा, ऊपर छाया दरखत।
सो छाया मोहोलों पर छई, ए रूहें लेवें लज्जत।। ४ ।।

ढपो चबूतरे के तीन तरफ कठेड़ा लगा है और ऊपर पुखराजी रोंस के वनों की छाया है। यहां के सुख की लज्जत रूहें लेती हैं।

जोए जमुना के मूल में, उतर जल चबूतर।
और कुण्ड एक इत बन्यो, जहां से जल चल्या उतर।। ५ ।।

जमुनाजी के मूल की नहर, जो पुखराज की तलहटी से पूरब (दिशा) में आई है, उसी में पहाड़ से उतरकर जल ढपो चबूतरे के नीचे मिल जाता है। यहां से आगे उतर कर मूलकुण्ड से आगे आता है।

इत भी चारों तरफों बैठक, सोभा लेत अति सोए।
तीनों तरफों कठेड़ा, जल उज्जल खुसबोए।। ६ ।।

मूल कुण्ड के ऊपर चारों तरफ बैठक बनी है जिसकी शोभा अपार है। तीन तरफ कठेड़ा है, आगे जल की खुशबू आती है।

जुदे जुदे रंगों जवेर ज्यों, कहा कहूं झलकार।
ए कुण्ड कठेड़ा चबूतरा, सिफत न आवे सुमार।। ७ ।।

यहां अलग-अलग रंग जवाहरातों की तरह झलकते हैं जिससे मूल कुण्ड, कठेड़े व चबूतरे की शोभा बेशुमार है।

अब कुण्ड से पुल आगूं चल्या, ढांपिल दोऊ किनार।
दोऊ तरफों बैठकें, थंभ चले दोऊ हार।। ८ ।।

अब मूल कुण्ड से आगे जमुनाजी निकलती हैं जहां से जमुनाजी के दोनों किनारे ढके है। दो-दो थंभों की हार के ऊपर पुल बना है। नीचे कई बैठकें बनी हैं।

Nijanand App

बड़े दरखत कुण्ड लों, ऊपर छाया सीतल।
अब दरखत मोहोलों माफक, दोऊ तरफों बीच जल।। ९ ।।

पुखराजी रोंस के पेड़ मूल कुण्ड के ऊपर छाया करते हैं। जल के दोनों तरफ महल आए हैं जिन पर वृक्षों की छाया है।

इत दोऊ तरफों कठेड़ा, ऊपर सोभित जल निरमल।
जहां लग जल ढांप्या चल्या, जुबां कहा कहे इन अकल।। १० ।।

जमुनाजी के जल के ऊपर (जो एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस ढंपी है) दोनों तरफ कठेड़े आया है। यहां की अक्ल से उसे कैसे बयान करें?

दोऊ तरफों दोए चबूतरे, दोऊ तरफ कठेड़े दोए।
बीच थंभ लगते चले, सोभा लेत अति सोए।। ११ ।।

मूल कुण्ड के किनारे जहां से जमुनाजी प्रकट होती हैं दो चबूतरे है। दोनों तरफ दो सुन्दर कठेड़े हैं। इन चबूतरों से लगते हुए दो थंभों की हार दो तरफ चलती हैं। उसकी शोभा बेशुमार है।

ऊपर द्योहरियां झलकत, जवेर अति सुन्दर।
ए खूबी कही न जावहीं, जल खलकत चल्या अन्दर।। १२ ।।

पुल के ऊपर द्योहरियां जवाहरातों के समान सुन्दर झलकती हैं। नीचे से जल बहता है। यह खूबी कहने में नहीं आती।

कई विध विध के कलस कई, कई किनारे कई जिनस।
झलकार न माए आकास, कई कटाव कई नकस।। १३ ।।

यहां कई तरह के कलश तथा किनारे के कटाव तथा नक्शकारी की शोभा की झलकार आकाश में नहीं समाती है।

बड़ी रूह रूहें सामिल, हक बैठत इन ठौर।
ए खूबी कहूं मैं किन जुबां, इतथें जिनस चली और।। १४ ।।

श्री श्यामाजी और सखियां श्री राजजी के साथ यहां आकर बैठती हैं। यहां की शोभा अधिक बढ़ जाती है जिसकी खूबी यहां की जबान से कैसे कहें। यहां से जमुनाजी अब खुली (एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस) पूरब को चलती है।

चार थंभ हारे चलीं, ऊपर ढांपिल तरफ दोए।
यों चल आई दूर लों, ए जल जमुना जोए।। १५ ।।

जहां से जमुनाजी खुली चली हैं वहां पर जमुनाजी के दोनों तरफ पाल पर दो-दो थंभों की हारें आई हैं जिससे पाल ढक गई है और इसी तरह से एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस तक जमुनाजी पूरब की ओर चली जाती हैं।

दोऊ किनारों बैठक, बन गेहेरा गिरदवाए।
अति सोभा इन जोए की, इन जुबां कही न जाए।। १६ ।।

दोनों किनारों पर नीचे बैठकें बनी हैं। ऊपर से पुखराजी रोंस के पेड़ों की छाया है। इस तरह से जमुनाजी की शोभा है जिसका वर्णन नहीं हो सकता।

Nijanand App

दोऊ तरफों जो द्योहरी, कई कंगूरे कलस ऊपर।
इत बैठक अति सुन्दर, चल आए दोऊ चबूतर।। १७ ।।

पाल के ऊपर दोनों तरफ किनारे पर द्योहरियां बनी है। उसमें कंगूरे और कलश आए हैं। यह बड़ी बैठक मूल कुण्ड से दोनों पालों की कही गई है (इन पालों को ही चबूतरा कहा गया है)।

ए जल तरफ ताल के, इतथें चल्या मरोर।
एक मोहोल एक चबूतरा, ए सोभा अति जोर।। १८ ।।

जमुनाजी का जल पूरब की तरफ चलकर दक्षिण की तरफ मुड़ जाता है और हौज कौसर तालाब की तरफ जाता है जहां से जमुनाजी मुड़ती हैं, वहां से दोनों किनारों पर एक मोहोल, एक चबूतरा, फिर मोहोल फिर चबूतरा शोभा देते हैं।

इन बन की सोभा क्यों कहूं, पेड़ चले आए बराबर।
दोऊ तरफों जुगतें, मोहोल आए ऊपर।। १९ ।।

पुखराजी रोंस के पेड़ों की शोभा क्या कहूं जो बराबर चल रहे हैं और दोनों तरफ किनारों के महलों पर छाया करते हैं।

ए लंबे बन को जाए मिल्या, जमुना भर किनार।
इतथें छत्री ले चल्या, जाए पोहोंच्या नूर के पार।। २० ।।

यह पुखराजी रोंस के पेड़ जो जमुनाजी के किनारे पर चल रहे हैं आगे महावन से मिल जाते हैं। यहां महावन की छतरियां पुखराज पहाड़ को घेरती हुई अक्षर धाम तक जाती हैं।

दोऊ किनारे सीधी चली, पोहोंची पुल केल घाट।
ए मोहोल चौक इतलों, आगूं चल्या ओर ठाट।। २१ ।।

जमुनाजी दोनों किनारों की शोभा के साथ सीधी चलती हैं और केल के घाट के पास बने पुल तक जाती हैं। अब महल और चबूतरों की शोभा जो दोनों पर थी यहां तक आई है। इसके बाद किनारों की शोभा बदल जाती है।

पेहेले बेवरा सातों घाट का, और जोए हौज मिलाए।
पीछे पुल मोहोल हकके, सो फेर नीके देऊं बताए।। २२ ।।

पहले सातों घाटों का, जमुनाजी का, हौज कौसर ताल का वर्णन हो चुका है। अब श्री राजजी महाराज के इन दोनों पुलों (केल का पुल, बट का पुल) के महलों की शोभा भलीभांति बता देती हूं।

दोऊ पुल के बीच में, सातों घाट सोभित।
पांच पांच भोम छठी चांदनी, इन मोहोंलों की न होए सिफत।। २३ ।।

दो पुलों के बीच सात घाट शोभा देते हैं। इन पुलों के महलों की पांच भोम छठी चांदनी है। इसकी शोभा कहने में नहीं आती है।

छूटक छूटक द्योहरी, सातों घाटों माहें।
दोऊ किनार जड़ाव ज्यों, क्यों कहूं सोभा जुबांए।। २४ ।।

सातों घाटों में जहां पर दो घाट मिलते हैं वहां द्योहरियां आई हैं। जमुनाजी के दोनों किनारे जड़ाव जैसे चमकते हैं। इसकी शोभा जबान से कैसे कहें?

Nijanand App

इतथें चली ताललों, एक मोहोल एक चबूतर।
दोऊ तरफों ढांपी चली, जोए हौज मिली यों कर।। २५ ।।

बट के पुल से आगे ताल की तरफ वही पहले वाली शोभा एक महल फिर एक चबूतरा की शोभा आई है। जमुनाजी के दोनों किनारे ढंके हैं और आगे जाकर हौज कौसर में मिलती हैं।

बन दोऊ किनारे ले चल्या, ऊपर बराबर जल।
कोई आगे पीछे दोऊ में नहीं, एक दोरी पात फूल फल।। २६ ।।

पुखराजी रोंस के पेड़ जमुनाजी की रोंस पर बराबर चलते हैं। कोई आगे पीछे नहीं हैं। इनके पत्ते फल, फूल सब एक सीध में हैं।

या विध कुण्ड से ले चली, अति खूबी दोऊ किनार।
जल ऊपर लटकत चली, दोरी बंध दोऊ हार।। २७ ।।

मूल कुण्ड से जमुनाजी की दोनों किनारों की शोभा इस तरह से आई है। जल के ऊपर पुखराजी रोंस के पेड़ों की डालियां लटकती हैं।

जो रंग जित सोभा लेवहीं, जित चाहिए फल फूल।
डार पात सब जुगते, कहा कहे जुबां ए सूल।। २८ ।।

पेड़ों की डालियां, पत्ते, फल, फूल के अनुसार जैसे रंग जहां चाहिए वैसी शोभा देते हैं। उनकी शोभा का बयान यहां की जबान से कैसे करें?

दरखत सबे खुसबोए के, खुसबोए जिमी और जल।
वाए तेज खुसबोए सों, तो कहा कहूं पात फूल फल।। २९ ।।

वृक्ष सब खुशबू देते हैं इसी तरह से जमीन, जल, हवा, पत्ते, फूल, फल, आदि सभी खुशबू देते हैं।

जिमी आकास जोत में, तेज जोत जल बन।
नूर द्योहरी किनार दोऊ, अवकास न माए रोसन।। ३० ।।

जमीन का तेज आकाश तक जाता है। इसी तरह जल और वन की तथा दोनों किनारों पर बनी द्योहरियों की शोभा आकाश में नहीं समाती।

दोरी बंध जल बराबर, दोऊ तरफ चली जो साध।
चल कुंडसे मरोर सीधी चली, मरोर हौज मिली आए आध।। ३१ ।।

जमुनाजी के दोनों किनारों की शोभा एक सीध में है। वह मूल कुण्ड से चलकर दक्षिण को मरोड़ खाती हैं और फिर दक्षिण की तरफ नौ लाख कोस चलकर पच्छिम को मुड़कर हौज कौसर ताल में मिलती हैं।

महामत कहे ए मोमिनों, मैं बोलत बुध माफक।
ख्वाब मन जुबान सों, क्यों करूं बरनन हक।। ३२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन कर रही हूं। मेरा मन और जबान स्वप्न का है। इससे अखण्ड शोभा का वर्णन कैसे करूं?

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ९६० ।।

Nijanand App